DR. SATYAPAL SINGH

Dr. Satyapal Singh, a trailblazing athletics coach and mentor, has redefined the landscape of Indian para-sports through his unwavering dedication and visionary leadership.

2. Born on 1st January, 1978 in the remote village of Machhri, Ghaziabad, Uttar Pradesh, Dr. Singh overcame significant adversity to pursue his passion for athletics, earning a Doctorate in the field alongside multiple prestigious qualifications in sports coaching and yoga. A former national-level athlete with 19 university medals to his name, he transitioned to coaching in 2004, dedicating his life to nurturing young talent. His trainees began winning medals at national and international levels from 2005 onward, setting the foundation for his transformative impact. In 2007, he took on the challenge of coaching para-athletes, propelling India onto the global stage.

3. As the Chief Coach of the Indian Para-Athletics Team for 15 years, Dr. Singh has been instrumental in shaping India's para-athletics legacy. Under his guidance, Indian para-athletes have won 4 Paralympic medals, 6 World Championship medals, and 18 Asian Para Games medals. His trainees, including Paralympic medalists Praveen Kumar, have shattered national and international records, bringing unparalleled glory to Indian sports. His mentorship has produced seven Arjuna Awardees, including India's first blind Arjuna Awardee, a testament to his exceptional coaching prowess.

4. With a career spanning 100+ international tournaments across 80+ countries, Dr. Singh has positioned India as a dominant force in global para- athletics. His relentless pursuit of excellence has not only shaped champions but also transformed lives, proving that determination and dedication can break all barriers. His legacy continues to inspire generations of athletes and coaches alike. Beyond the field, Dr. Singh has selflessly supported financially disadvantaged athletes, providing them with training, nutrition, and equipment at no cost, embodying the spirit of inclusivity and compassion.

5. Dr. Singh was honoured with the Dronacharya Award in 2012 becoming the youngest recipient in Indian sports history.

डॉ. सत्यपाल सिंह

डॉ. सत्यपाल सिंह एक अग्रणी एथलेटिक्स कोच और मार्गदर्शक हैं, जिन्होंने अपने अटूट समर्पण और दूरदर्शी नेतृत्व के माध्यम से भारतीय पैरा–खेलों के परिदृश्य को पुनः परिभाषित किया है।

2. 01 जनवरी, 1978 को उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद के सुदूर गांव मछरी में जन्मे, डॉ. सिंह ने एथलेटिक्स के प्रति अपने जुनून को आगे बढ़ाने के लिए कई मुश्किलों का सामना किया और खेल कोचिंग तथा योग में कई प्रतिष्ठित योग्यताओं के साथ–साथ इस क्षेत्र में डॉक्टरेट की उपाधि भी अर्जित की। 19 विश्वविद्यालय पदकों के साथ राष्ट्रीय स्तर के इस पूर्व एथलीट ने 2004 में कोचिंग में कदम रखा और युवा प्रतिभाओं को निखारने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। उनके प्रशिक्षुओं ने वर्ष 2005 से राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पदक जीतना शुरू कर दिया, जिसने उनके परिवर्तनकारी प्रभाव की नींव रखी। वर्ष 2007 में, उन्होंने पैरा–एथलीटों को कोचिंग देने की चुनौती ली और भारत को वैश्विक मंच पर आगे बढ़ाया।

3. 15 वर्षों तक भारतीय पैरा–एथलेटिक्स टीम के मुख्य कोच के रूप में, डॉ. सिंह ने भारत की पैरा–एथलेटिक्स विरासत को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनके मार्गदर्शन में, भारतीय पैरा–एथलीटों ने 4 पैरालंपिक पदक, 6 विश्व चैम्पियनशिप पदक और 18 एशियाई पैरा खेलों के पदक जीते हैं। पैरालंपिक पदक विजेता प्रवीण कुमार सहित उनके प्रशिक्षुओं ने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय रिकॉर्ड तोड़कर भारतीय खेलों को अद्वितीय गौरव दिलाया है। उनके मार्गदर्शन में सात अर्जुन पुरस्कार विजेता तैयार हुए हैं, जिनमें भारत के पहले नेत्रहीन अर्जुन पुरस्कार विजेता भी शामिल हैं, जो उनकी असाधारण कोचिंग क्षमता का प्रमाण है।

4. 80 से ज़्यादा देशों में 100 से ज़्यादा अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंटों में शामिल रहे डॉ. सिंह ने भारत को वैश्विक पैरा–एथलेटिक्स में एक प्रबल दावेदार के रूप में स्थापित किया है। उत्कृष्टता के लिए उनके अथक प्रयास ने न केवल चैंपियनों को तैयार किया है, बल्कि उनके जीवन को भी बदला है, जिससे यह साबित होता है कि दृढ़ संकल्प और समर्पण से सभी बाधाओं को पार किया जा सकता है। उनकी विरासत एथलीटों और कोचों की पीढ़ियों के लिए प्रेरणा स्रोत बनी हुई है। मैदान से परे, डॉ. सिंह ने आर्थिक रूप से वंचित एथलीटों की निस्वार्थ रूप से सहायता करते हुए, उन्हें बिना किसी खर्च के प्रशिक्षण, पोषण और उपकरण प्रदान किए हैं, जो समावेशिता और करुणा की भावना को दर्शाता है।

5. डॉ. सिंह को वर्ष 2012 में द्रोणाचार्य पुरस्कार से सम्मानित किया गया और वे भारतीय खेलों के इतिहास में इसके सबसे कम उम्र के प्राप्तकर्ता बने।